तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय 3

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.0.0 प्रस्तावना

अनुसंधान कार्य की सही दिशा की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है, कि शोध-प्रबंध की व्यवस्थित रूपरेखा तैयार की जाये, क्योंकि यह रूपरेखा ही शोध की एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। इसमें प्रतिदर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है, इसके बाद उपकरणों एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि इसी आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तत्पश्चात् उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाला जाता है, तब कहीं जाकर एक शोध रूपी भवन खड़ा हो पाता है।

पी.वी. युंग के शब्दों में, "अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है तथा उनके उन अनुक्रमों पारस्परिक संबंधों कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है जो कि प्राप्त तथ्यों के निर्धारित करते हैं।"

अतः अनुसंधान किसी क्षेत्र विशेष की समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण है।

3.1.0 प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रतिदर्श के रूप में 27 हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन एवं 5 क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के विशेषज्ञ, प्रवक्ता, सहायक अध्यापक और एम.एड. विद्यार्थियों को चयनित गया है।

अध्ययन के लिये प्रतिदर्श के रूप में चयनित विद्वान विशेषज्ञ, प्रवक्ता, सहायक अध्यापक एवं एम.एड. विद्यार्थियों की संख्या तालिका क्रमांक 3.1 में प्रतिदर्श किया गया है। उन्हें प्रश्नवाली दी गयी थी और उन्होनें प्रस्तुत प्रश्नवाली पर अपने विचार दियें।

तालिका क्रमांक 3.1

प्रतिदर्श चयन विवरण

क्र.	पद	स्थान	कुल
1	विशेषज्ञ	महेसाणा, विसनगर	2
2	प्रवाचक	महेसाणा, विसनगर	10
3	सहायक प्राध्यापक	महेसाणा, विसनगर, पाटन, बेचराजी, भोपाल	15
4	एम.एड. विद्यार्थियों	भोपाल	5
		कुल	32

3.2.0 शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में निम्न पद्धति का प्रयोग किया गया है, जो इस प्रकार है –

3.2.1 सर्वे पद्धति

सर्वेक्षण अध्ययनों का संचालन विद्यमान परिघटना के विस्तृत विवरण को इस मंतव्य से एकत्र करने के लिये किये जाते हैं कि चालू स्थितियों व पद्धतियों के औचित्य स्थापित करने में आंकड़ों को प्रयोग किया जा सके या उन्हें सुधारने के लिये अधिक अभिज्ञ योजना बना सके। केवल किसी संस्था, वर्ग या क्षेत्र की स्थिति का विश्लेषण, व्याख्या और प्रतिवेदन ही उनका उद्देश्य नहीं होता जिससे निकट भविष्य में अभ्यास का निर्देशन ही बल्कि स्थापित मानकों से तुलना कर पद स्थिति की पर्याप्त ज्ञात करना भी होता है। कुछ

सर्वेक्षणों में तीन प्रकार की सूचनाऐं एकत्रित करने का कार्य होता है। (1) विद्यमान पदस्थिति से संबंधित आंकड़े, (2) विद्यमान स्थिति की स्थापित स्थिति व मानकों से तुलना व (3) विद्यमान स्थिति के सुधार के साधन, जबकि कुछ इनमें से एक या दो प्रकार की सूचनाऐं एकत्र करते हैं।

सर्वेक्षण अध्ययनों के अन्वेषण के अधीन समस्या की प्रकृति व उद्देश्य पर निर्भर, भिन्न–भिन्न स्परूप हो सकते हैं। वह विस्तार में विस्तीर्ण या संकीर्ण हो सकते हैं। कुछ सर्वेक्षणों के घेरे में अनेक देश, राज्य या क्षेत्र होते हैं, कुछ में केवल एक देश, राज्य, क्षेत्र, जिला, तहसील, शहर, स्कूल, पद्धति या कोई अन्य इकाई हो सकती है। सर्वेक्षण आंकड़े समष्टि की प्रत्येक इकाई से एकत्र किये जा सकते हैं या निरूपित प्रतिदर्श से। प्राप्त सूचना बड़ी संख्या में संबंधित घटकों के विषय में हो सकती है या केवल चयनित मदों तक सीमित हो सकती है।

3.2.2 विषय वस्तु विश्लेषण

विषयवस्तु विश्लेषण अनुसंधान की एक प्रविधि है जिसमें लिखित संप्रेषण से प्राप्त विशेष सामग्री के तथ्यों का विश्लेषण करके महत्वपूर्ण तत्व प्राप्त किये जाते हैं। विषयवस्तु विश्लेषण के बारे में कैपलन कहते हैं –

"विषयवस्तु विश्लेषण एक विशिष्ट संप्रेषण के अंतर्गत निहित अर्थ का क्रमबद्ध और मात्रात्मक ढंग से विवेचना प्रस्तुत की जाती है।"

बेसिलसन (1959) के अनुसार "विषयवस्तु विश्लेषण अनुसंधान की वह प्रविधि है, जिसमें संप्रेषण द्वारा प्राप्त सामग्री के व्यक्त रूप का वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक ढंग से वर्णन किया जाता है।"

चैपलिन के अनुसार, "विषयवस्तु विश्लेषण एक विधि या अध्ययन है जिसके द्वारा निश्चित शब्दों, विचारों या संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति की आवृत्ति के आधार पर प्रलेख भी संप्रेषण सामग्री का अध्ययन किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं की विश्लेषण के आधार पर विषयवस्तु विश्लेषण को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि विषयवस्तु विश्लेषण वह प्रविधि है जिसके द्वारा सरकारी संलेखों, न्यायिक निर्णय, नियम, बजट व वित्तीय संलेख, अध्यापन के पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रमों की अंर्तवस्तु, समाचार पत्र, विश्वविद्यालयों की नियमावली, पत्रिका, साक्षात्कार की टिप्पणियों आदि सामग्री के अंर्तनिहित तथ्यों को ज्ञात किया जाता है।

3.3.0 शोध मे प्रयुक्त उपकरण एवं तकनीक

किसी भी शोध कार्य में उपकरणों का बहुत महत्व होता है क्योंकि इन उपकरणों के माध्यम से ही आवश्यक आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं। उपकरणों का चयन एवं उपयोग बड़ी ही सावधानी से किया जाना चाहिये जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह न किया जा सके।

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का संग्रह करने के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली में बी.एड. अंतर्गत गुजराती विषय के सामान्य मुद्दे, पाठ योजना, सूक्ष्म शिक्षण, प्राप्तांक, विषय वस्तु, प्रश्नपत्र, बी.एड. की अवधि आदि प्रश्नों को रखा गया है। जिससे दूसरों के विचारों को समझना प्रमाणित करना बौद्धिक एवं वैयक्तिक प्रमाणिकता, वस्तुनिष्ठता, खुली विचारधारा, उत्सुक, समझ लेने की क्षमता प्रश्न करने का साहस

यह मूल्य उपस्थित हैं या नहीं यह जानने के लिये तीन बिंदुओं को लिया गया है। इनमें 40 प्रश्नों का समावेश किया है इसमें एक से दस तक सामान्य प्रश्न, ग्यारह से बीस तक विषय वस्तु के आधार पर प्रश्न, इक्कीस से पच्चीस तक प्रश्न पत्र के आधार पर प्रश्न, छब्बीस से चालीस तक इंटर्नशिप, सूक्ष्म शिक्षण समय एवं पद्धति के आधार पर प्रश्न हैं। साक्षात्कार में बी.एड. के गुजराती पाठ्यक्रम संबंधित पांच से छः प्रश्न पूछे गये थे।

यह प्रश्नावली और साक्षात्कार शोधकर्ता द्वारा तैयार की गई है। तत्पश्चात विषय विशेषज्ञों के साथ बैठकर प्रश्नावली के संबंध में चर्चा की गई। विशेषज्ञ द्वारा दिये गये आवश्यक सुझावों को ध्यान में रखते हुए प्रश्नावली में कुछ संशोधन किये गये और संशोधन पश्चात् पुनः प्रश्नावली पर विशेषज्ञ के साथ चर्चा की गई। और इस प्रकार प्रश्नावली को अंतिम रूप दिया गया।

3.4.0 प्रदत्तों का संकलन

शोध अध्ययन को ध्यान में रखकर प्रदत्तों का संकलन किया गया है। प्रदत्तों के संकलन का कार्य माह जनवरी–फरवरी 2011 में किया गया है। प्रदत्त संकलन के लिये क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल द्वारा एक निश्चित समय सीमा निर्धारित की गई थी। जिस समय सीमा को ध्यान में रखकर प्रदत्त संकलन किया गया। प्रदत्त संकलन के लिये शोधकर्ता नें महेसाणा, विसनगर, पाटन, भाण्डु, बेचराली, भोपाल (क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान) के शिक्षा महाविद्यालय में विशेषज्ञ, प्रवक्ता, सहायक अध्यापक एवं एम.एड. विद्यार्थियों से अवगत कराया और अध्ययनकर्ता नें प्रश्नावली दी। तत्पश्चात प्रश्नावली पूर्ण होने के बाद शोधकर्ता नें वापस ले ली। इसके

अलावा शोधकर्ता नें विशेषज्ञ से शोध अध्ययन के संदर्भ में साक्षात्कार भी लिया।

3.5.0 विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियां

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार प्रदत्तों की सारणियां बनाई गई। उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये प्रत्येक मूल्य का इकाई निहित प्रतिशत और काई–वर्ग ज्ञात किया गया।